thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक : 39
सृष्टि संवत् 1960853115
4 जनवरी 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 39, 31/4 जनवरी 2015 तदनुसार 20 पौष सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

5 जनवरी जन्मदिन पर विशेष.....

अमर सेनानी-स्वामी स्वतन्त्रानन्द

-ले० श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज वीतराग सन्यासी होते हुए भी आर्य समाज के कर्मठ सेनानी थे। जिन पुण्यात्माओं को जन्म देकर यह भारत भूमि धन्य हो गई है, उन पुण्यात्माओं में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी एक थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म विक्रम सम्वत् 1934 के पौष मास की पूर्णिमा को मोही ग्राम जिला लुधियाना में एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार में हुआ था। बालक केहरसिंह का जन्म सन् 1877 ई. में उस समय हुआ जब महर्षि दयानन्द जी महाराज वेद ज्ञान की अमृत धारा को प्रवाहित करते हुए लुधियाना नगर पधारे। उस समय कौन जानता था कि यह बालक बड़ा होकर महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनकर अपना जीवन अर्पण कर देगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन त्याग, तप, सरलता और संयम का प्रतीक था। उनकी करनी और कथनी में भेद नहीं था। उनका व्यक्तिगत जीवन सामान्य व्यक्तियों के लिए ही नहीं अपितु त्यागी, तपस्वी महात्माओं के लिए भी अनुकरणीय जीवन था।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने भरपूर यौवन में धन-धान्य से भरे घर का परित्याग किया। उनके पिताजी उन्हें सेना में भर्ती कराके सेना का बहुत बड़ा अधिकारी बनाना चाहते थे, किन्तु उन्हें तो समाज का उच्चकोटि का सेवक बनना था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का विवाह उस समय की प्रथा के अनुसार बाल्यकाल में ही कर दिया गया। थोड़े समय में ही नव वधू की मृत्यु हो गई इसलिए उन्हें गृहस्थ से छुटकारा मिल गया। पं.बिशनदास जी के सत्संग से केहरसिंह पर भी वैदिक धर्म का रंग चढ़ गया क्योंकि पं. बिशनदास जी महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रभावित थे। उनके सत्संग से केहरसिंह के अन्दर देशसेवा व धर्मसेवा के भाव हिलोरें लेने लगे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज निड़रता की मूर्ति थे। उन्होंने ऐसे कार्य किए हैं जो उनकी वीरता को प्रस्तुत करते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने आर्य समाज के लिए एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में कार्य किया। जिस प्रकार एक वीर योद्धा का लक्ष्य रणभूमि में जाकर अपने देश के लिए मर-मिटना होता है उसी प्रकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन का लक्ष्य महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन-जन में फैलाना था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज वीर थे और वीरों के वंशज थे। उन्होंने अपने जीवन काल में कई संग्रामों में भाग लिया, कई मोर्चों को चलाया और प्रत्येक मोर्चे में अपने तपोबल, दूरदर्शिता, नीतिमत्ता व त्याग के कारण विजय प्राप्त की। सन् 1938 में जब आर्य समाज ने हैदराबाद के क्रूर निजाम के शासन से टक्कर लेने का निश्चय किया स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को इस संग्राम का फील्ड-मार्शल बनाया गया। महात्मा नारायण स्वामी प्रथम सर्वाधिकारी बनकर सत्याग्रह को निकले। संसार भर में यह प्रथम सत्याग्रह था जो स्थानीय होते हुए भी स्थानीय नहीं था। सत्याग्रह किया गया था राज्य के पीड़ित लोगों के नागरिक, धार्मिक व सांस्कृतिक अधिकारों के लिए, परन्तु सत्याग्रही दूर-दूर से, सहस्रों मीलों की दूरी से चलकर सत्याग्रह शिविरों में जेलें भरने के लिए पहुँचे। महात्मा नारायण स्वामी जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज द्वारा इस धर्म युद्ध के संचालन के बारे में लिखा है कि- सत्याग्रह का संचालन इतनी उत्तमता से हुआ कि इस देश ही में नहीं बल्कि इंग्लैंड में भी उसका प्रभाव पहुंचा। इस प्रकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने नीतिकौशल से सत्याग्रह का संचालन किया और अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आर्य समाज के लौह पुरूष थे। वे किसी भी मत, पन्थ और प्रलोभन के आगे नहीं झुके। चाहे वह लोहारू नामक रियासत की घटना हो या मालेरकोटला के नवाब से टक्कर लेना हो। वे किसी भी परिस्थितियों में किसी के आगे नहीं झुके और हमेशा विजयी रहे।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 5 जनवरी को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जन्मदिवस पर हम उन्हें श्रद्धा से स्मरण करते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने जो मार्ग दिखाया है। हम भी उस मार्ग का अनुसरण करें। हमारा सौभाग्य है कि हमारे बुजुर्गों को स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जैसे उच्चकोटि के सन्यासियों का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणादायक है। उनके जीवन की प्रत्येक घटनाओं से उनकी तपस्या, संयम और सदाचार की झलक मिलती है। हम भी उनके त्यागमय, संयमी जीवन से शिक्षा लेकर समाज के लिए कार्य करें और उनके आदर्शों को अपने जीवन के अन्दर अपनाएं।

वर्ष 2015 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2015 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

इसी प्रकार पल विपल बीतते सांझ के चार बजने को आये। भगवान् ने नाई को बुलाकर क्षौर करने को कहा। लोगों ने निवेदन किया कि 'भगवन् उस्तरा न फिराइए। छाले फुंसियां कट कर लहू बहने लगेगा'। परन्तु उन्होंने कहा कि 'इसकी कोई चिन्ता नहीं है'। क्षौर कराकर उन्होंने नख उतरवाए। फिर गीले तौलिए से सिर को पोंछकर सिरहाने के सहारे पलङ्ग पर बैठ गये।

उस समय श्रीमहाराज ने आत्मानन्द जी को प्रेम से आहूत किया। जब आत्मानन्द जी हाथ जोड़कर सामने आ खड़े हुए तो कहा—वत्स, मेरे पीछे बैठ जाओ। गुरुदेव का आदेश पाकर वे सिरहाने की ओर, तकिये के पास, प्रभु की पीठ थाम कर विनय से बैठ गये।

महाराज ने अतीव वत्सलता से कहा—वत्स आत्मानन्द, आप इस समय क्या चाहते हैं ? गुरु महाराज के वचन सुनकर आत्मानन्द जी का हृदय भर आया। उनकी आंखों से एकाएक आंसुओं की लड़ी टूट पड़ी। गद्गद गले से आत्मानन्दजी ने नम्रीभूत निवेदन किया कि 'यह तुच्छ सेवक तो रात दिन यही प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपनी अपार कृपा से श्री चरणों को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे। इसे इससे बढ़कर त्रिभुवन भर में दूसरी कोई वस्तु प्रिय नहीं है।'

महाराज ने हाथ बढ़ाकर आत्मानन्द जी के मस्तक पर रक्खा और कहा—वत्स, इस नाशवान् क्षणभङ्गर शरीर ने कितने दिन स्वस्थ रहना है! बेटा अपने कर्तव्य कर्म का पालन करते आनन्द से रहना। घबराना नहीं। संसार से संयोग और वियोग का होना स्वाभाविक है।

महाराज ने इन वचनों को सुनकर आत्मानन्द जी सिसक सिसककर रोने लगे। गुरु-वियोग-वेदना को अति समीप खड़ा देखकर उनका जी शोक सागर के गहरे तल में डूब गया।

गोपाल गिरि नाम के एक संन्यासी भी कुछ काल से श्री चरण-शरण में वास करते थे। महाराज ने उनको आमन्त्रित करके कहा कि 'आपको कुछ चाहिए तो बता दीजिए।' उन्होंने भी यही विनय की कि 'भगवन्, हम लोग तो आपका कुशल-क्षेम ही चाहते हैं। हमें सांसारिक सुख की कोई भी वस्तु नहीं चाहिए।' फिर महाराज ने दो सौ रुपये और दो दुशाले मंगा कर भीमसेन जी और आत्मानन्द जी को प्रदान किये। उन दोनों ने अश्रुधारा बहाते, भूमि पर सिर रखकर वे वस्तुयें लौटा दीं। वैद्यवर भक्तराज श्रीलक्ष्मण दास जी को भी भगवान् ने कुछ द्रव्य देना चाहा परन्तु उन्होंने द्रवीभूत हृदय से कर जोड़ कर लेने से इन्कार कर दिया।

इस प्रकार अपने शिष्यों से गुरु महाराज को विदा होते देख आर्य जनों के चित्त की चंचलता और चिन्ता की प्रचण्डता चरम सीमा तक पहुँच गई। वे बड़ी व्याकुलता से सामने आ खड़े हुए। उस समय श्री स्वामी जी ने दोनों नेत्रों की ज्योति सब बन्धुओं के मुखमण्डलों पर डाल कर एक नीरव, पर अनिर्वचनीय स्नेह-संलाप सहित उनसे अन्तिम विदाई लेने लगे। उनके प्रेम-पूर्ण नेत्र अपने पवित्र प्रेम के सुपात्रों को धैर्य्य देते और ढांढस बंधाते प्रतीत होते थे। महाराज प्रसन्न-चित्त थे। उनके मुख पर घबराहट का कोई भी चिन्ह परिलक्षित नहीं होता था।

परन्तु भक्त जनों की आशायें क्षण-क्षण में निराशा-निशा में लीन हो रही थीं उनके उत्साह की कोमल कलियों के सुकोमल अङ्ग पल-पल में भङ्ग हुए चले जाते थे। वे गुरुदेव की दैवी देह के देव-दुर्लभ दर्शन पा तो रहे थे, परन्तु उनकी आंखों के आगे रह रह कर आंसुओं की बदलियां आ जाती थीं। रुलाई का कुहरा छा जाता था। सर्वत्र निविड़ तमोराशि का राज्य दिखाई देने लगता था। वे जी को कड़ा किये कलेजा पकड़ कर खड़े तो थे, परन्तु खोखले पड़े और घुने हुए दाने की भांति मन:सत्त्व-रहित थे।

ऐसी दशा ही में सायंकाल के पांच बजने लगे। उस समय एक भक्त ने पूछा कि 'भगवन्, आपकी प्रकृति कैसी है?' श्रीमहाराज ने उत्तर दिया कि 'अच्छी है; प्रकाश और अन्धकार का भाव है।' इन्हीं बातों में जब साढ़े पांच बजे तो महाराज ने सब द्वार खुलवा दिये। भक्तों को अपनी पीठ के पीछे खड़े होने का आदेश किया। फिर पूछा कि 'आज पक्ष तिथि और वार कौन सा है? पण्ड्या मोहन लाल ने शिरोनत होकर निवेदन किया कि 'प्रभो, आज कार्तिक कृष्ण पक्ष का पर्य्यवसान और शुक्ल का प्रारम्भ है। अमावास्या और मङ्गलवार है।'

तत्पश्चात् महाराज ने अपनी दिव्य दृष्टि को उस कोठरी के चहुं ओर घुमाया और फिर गम्भीर ध्वनि से वेद-पाठ करना आरम्भ कर दिया। उस समय उनके गले में, उनके स्वर में, उनके उच्चारण में, उनकी ध्वनि में और उनके शब्दों में किंचिन्मात्र भी निर्बलता प्रतीत नहीं होती थी। भगवान् के होनहार भक्त पण्डित श्री गुरुदत्त जी उस कमरे के एक कोने में भित्ति के साथ लगे हुए भगवान् की भौतिक दशा के अन्त का अवलोकन कर रहे थे। टकटकी लगाये निर्निमेष नेत्रों से उनकी ओर देख रहे थे।

पण्डित महाशय उस धर्मावतार के दर्शन करने पहले पहल ही आये थे। उनके अन्त:करण में अभी आत्म-तत्त्व का अंकुर पूर्ण-रूप से नहीं निकल पाया था, परन्तु श्री महाराज की अन्तिम दशा को देख कर वे अपार आश्चर्य से चकित हो गये। वे चौकसाई और विचार से देख रहे थे कि मरणासन्न महात्मा के तन पर अगणित छाले फूट निकले हैं। उनको विषम वेदना व्यथित किये जाती है। उनकी देह को दावानल सदृश दाह-ज्वाला एक प्रकार से दग्ध कर रही है। प्राणान्तकारी पीड़ा उनके सम्मुख उपस्थित है। परन्तु महात्मा शान्त बैठे हैं। दु:ख-क्लेश का नाम-निर्देश तक नहीं करते। उलटे गम्भीर गर्जना से वेद-मंत्र गा रहे हैं। उनका मुख प्रसन्न है। आंखें कमल सदृश खिल रही है। उनका विमल भाल अद्भुत आभा से चन्द्रमा के सदृश चमक रहा है। व्याधि मानों उनके लिए त्रिलोकी में त्रयकाल उत्पन्न ही नहीं हुई। यह सहनशीलता शरीर की सर्वथा नहीं है। अवश्यमेव यह इनका आत्मिक बल है।

यह पहला पल था कि जिसमें महर्षि मृत्यु की अवस्था देखकर श्री गुरुदत्त ऐसे धुरन्धर नास्तिक के हृदय की उपजाऊ भूमि में आत्मिक जीवन की जड़ लग गई। इन भावों की विद्युत-रेखा चमकते ही वे सहसा चौंक पड़े। उन्होंने क्या देखा कि एक ओर तो परम धाम को पधारने के लिए प्रभु परमहंस पलङ्ग पर बैठे प्रार्थना कर रहे हैं और दूसरी ओर वे व्याख्यान देने के वेश में सुसज्जित उसी कमरे की छत के साथ लगे बैठे हैं। इस आत्म-योग के प्रत्यक्ष प्रमाण को पाकर पण्डित महाशय का चित्त-स्फटिक आस्तिक भावों की प्रभा से चमचमा उठा। मानो एक ओर से निकलती हुई ज्योति उनकी देह के दीप में प्रवेश कर गई।

गुरुदत्त अपने गुप्त रीति से आत्मदाता गुरुदेव को फिर अतिशय श्रद्धा से देखने लगे। भगवान् वेद-गान के अनन्तर, परम प्रीति से पुलकित-अंग होकर, संस्कृत शब्दों में परमात्मदेव की प्रार्थना करने लगे। फिर आर्य-भाषा में ईश्वर गुण गाते गाते भक्तों की परम गति भगवती गायत्री को जपने लगे। उस महामंत्र के पुण्य पाठ को करते करते मौन हो गये और चिरकाल तक सुवर्णमयी मूर्ति की भांति निश्चल-रूप से समाधिस्थ बैठे रहे। उस समय उनके स्वर्गीय मुखमण्डल के चारों ओर सुप्रसन्नता-प्रभात की झलमलाहट पूर्ण-रूप से झलमल कर रही थी।

समाधि की उच्चतम भूमि से उतर कर भगवान् ने दोनों नेत्रों के पलक-कपाट खोलकर दिव्य ज्योति का विस्तार करते हुए कहा—हे दयामय, हे सर्व शक्तिमन् ईश्वर, तेरी यही इच्छा है। सचमुच 'तेरी ही इच्छा है।' परमात्म देव, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा! मेरे परमेश्वर, तैंने अच्छी लीला की! इन शब्दों का उच्चारण करते ही ब्रह्मर्षि ने आत्मिक प्राण को ब्रह्माण्ड-द्वार द्वारा, परम धाम को जाने के लिए स्वर्ग-सोपान पर आरूढ़ किया और तत्पश्चात् पवन-रूप प्राण को कुछ पल तक भीतर रोककर प्रणव-नाद के साथ बाहर निकाल दिया। उसे सूत्रात्मा वायु में लीन कर दिया। इस प्रकार दीवाली की उस शाम दो, दो सूर्य अस्त हो गये एक नभस्तल पर भौतिक तो दूसरा भूतल पर वैदिक। इसी घटना को उर्दू के शायर स्वर्गीय त्रिलोकचन्द जी ने इस प्रकार कलमबन्द किया है-

ये कैसी अबतरी है निज़ामे जहान् में,
बरपा है इक तहलका ज़मीं आसमान् में।
दो आफ़ताब डूबते हैं एक आन में,
मग़रिब में एक दूसरा हिन्दोस्तान में।।
इनमें इक आफ़ताब तो चर्खेबरीं का है,
और दूसरा ज़मीं का इसी सरज़मीं का है।। **(क्रमशः)**

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

वीतराग तपस्वी-स्वामी स्वतन्त्रानन्द

भारत भूमि को ऋषियों, मुनियों की धरती होने का गौरव प्राप्त है। हमारे देश में समय-समय पर अनेक ऋषियों, महापुरूषों तथा वीरों ने जन्म लिया। उन्होंने अपने धर्म तथा देश के लिए कार्य किया, अपना बलिदान दिया और इस संसार में अमर हो गए। उनके तप और त्याग के कारण आज भी हम उन्हें श्रद्धा से याद करते है। ऐसे ही हमारे पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज थे। आर्य सन्यासियों में यदि किसी वीतराग, तपस्वी, परदु:खकातर, तुरीयाश्रमी को लौह पुरूष की संज्ञा दी जा सकती है तो इसके वास्तविक अधिकारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हैं।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म एक सिख परिवार में हुआ। लुधियाना जिले के मोही गांव में इनका जन्म हुआ। पंजाब भूमि को यह गौरव प्राप्त है कि यहां पर महर्षि दयानन्द के गुरू दण्ड़ी स्वामी विरजानन्द ने जन्म लिया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाज पतराय, स्वामी दर्शनानन्द आदि इसी पंजाब की धरती पर पैदा हुए। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म संवत् १९३४ के पौष मास की पूर्णिमा को सरदार भगवान सिंह नागक एक सिख के घर हुआ। जिस समय बालक केहरसिंह का जन्म हुआ उस समय स्वामी दयानन्द जी महाराज वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए लुधियाना पधारे हुए थे। उस समय इस बात को कौन जानता था कि सिख घराने में पैदा हुआ यह बालक महर्षि दयानन्द की वाटिका को सींचेगा। उनका बचपन का नाम केहर सिंह था। बालक केहर सिंह की आरम्भिक शिक्षा ग्राम मोही में हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की रूचि बचपन में ही आध्यात्मिक ग्रन्थों में थी। इसके लिए उन्होंने संस्कृत का अभ्यास किया। वे छोटी आयु में वेदान्त दर्शन का अध्ययन करते रहे। उस समय में प्रचलित कुरीतियों के कारण स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को बचपन में गृहस्थ के बन्धनों में बाँध दिया गया। किन्तु यह दैवी संयोग ही था कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया। इससे पहले कि उन्हें दोबारा गृहस्थ के बन्धन में बाँधा जाता , वे वैराग्य पथ के पथिक बन गए और उन्होंने गृहत्याग कर दिया।

केहरसिंह के ननिहाल गांव लताला में उदासीन सम्प्रदाय के एक मठ में पं. विशनदास नामक आर्य विद्वान् रहते थे। इनके सम्पर्क में आने से केहरसिंह भी आर्य विचारधारा में दीक्षित हो गए। अब उन्होंने अध्ययन और सत्संग को ही जीवन का लक्ष्य बना लिया इसलिए वे इधर-उधर भ्रमण करते रहते थे। २३ वर्ष की आयु में केहरसिंह ने सन्यास की दीक्षा ले ली और प्राणपुरी नाम धारण किया। साधु प्राणपुरी में अब संस्कृत पढ़ने की अदम्य प्रेरणा जागृत हुई। उन्होंने अमृतसर में स्वामी स्वरूपदास से कुछ समय के लिए वेदान्त तथा न्यायदर्शन पढ़े। उन दिनों स्वामी स्वतन्त्रानन्द अपने शरीर पर मात्र कौपीन ही धारण करते थे और पात्र के रूप में एक बाल्टी रखते थे। लोग उनको बाल्टी वाले साधु के नाम से पुकारने लगे। उनकी स्वतन्त्र प्रकृति के कारण लोग उन्हें स्वामी स्वतन्त्रानन्द कहने लगे और बाद में वे इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी प्रतिदिन नियम से योगाभ्यास करते थे और वेद का स्वाध्याय किया करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जीवनचर्या निश्चित थी। उनमें यह एक विशेष गुण था कि चाहे कितने ही दिन क्यों न बीत जाए वे दोपहर का भोजन 12 बजे के बाद नहीं करते थे। रात्रि के समय 8 बजे के बाद दूध नहीं पीते थे। वे भोजन स्वाद के लिए नहीं, अपितु शरीरयात्रा के लिए करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी लगातार वेद प्रचार करते थे। न केवल व्याख्यानों के द्वारा, अपितु पारस्परिक बातचीत द्वारा भी। पंजाब, सिंध और बलोचिस्तान, कश्मीर और दिल्ली का कोई स्थान ऐसा नहीं था जहां उनके भाषण न हुए हों। इसके अतिरिक्त सारे भारत की पदयात्रा और प्रचार किया। इसके साथ ही मारीशस द्वीप, अफ्रीका, थाइलैण्ड़ आदि अनेक देशों में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

राष्ट्र सेवा में भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अग्रगण्य थे। लार्ड हार्डिंग के ऊपर गोला फैंका गया तब भी उनकी जांच की गई थी। पंजाब में अंग्रेज गवर्नर पर भी गोली चलाए जाने वाले लोगों के साथियों में उनका नाम लिया गया था। लोहारू में जब आर्य समाज के जलूस पर मुसलमानों से शस्त्रों सहित आक्रमण किया तब स्वामी जी सबसे आगे थे। मुसलमानों ने लाठी कुल्हाड़ी आदि हथियारों से स्वामी जी पर प्रहार किए, परन्तु स्वामी जी अड़िग रहे। इस अड़िग भाव को देखकर मुसलमान भाग गए। वहां के पुलिस अधिकारी ने अपनी गवाही में कहा था कि यदि स्वामी जी लाठी उठा लेते तो न जाने क्या हो जाता। स्वामी जी ने इतना ही कहा हम साधु हैं- तुमने रोटी नहीं दी सोटी दी हमारे लिए कोई अन्तर नहीं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जितने बलवान थे उतने ही शान्त थे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जहां भी गए अपने पांवों के निशान छोड़ते गए। उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह का संचालन जिस योग्यता व कर्मठता से किया उसके कारण देश में तो क्या विदेश में भी उनकी धाक् जम गई। सर्वत्र उनकी योग्यता का गुणगान होने लगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने सब अवस्था को भांपकर तैयारी आरम्भ कर दी थी। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने दूसरों की भावनाओं का हमेशा सम्मान किया किन्तु अपनी विचारधारा नहीं छोड़ी। अत: लोहारू में हुए हमले से सिर में तीन इंच गहरा घाव हुआ तो पैदल चलकर स्टेशन पहुंचे। सिलाई के समय क्लोरोफार्म नहीं लिया तथा पुन: शीघ्र लोहारू जा पहुंचे। परिणामस्वरूप नवाब को झुकना पड़ा। पंजाब के मालेरकोटला में तो आपका नाम सुनते ही मन्दिर के ताले खोल दिए गए। 1935 में स्वामी स्वतन्त्रानन्द के कारण ही लाहौर में बूचड़खाना नहीं खुल सका जिसे बाद में पठानकोट में लगाने की योजना बनी। इस पर एक मुसलमान ने लिखा था कि अंग्रेज सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि टक्कर किससे है? यह टक्कर उसी तेजस्वी, प्रतापी, वीर आर्य नेता से है जो अभी-अभी हैदराबाद रियासत को पाठ पढ़ाकर आया है। यह फकीर नहीं तेजस्वी पुरूष है जो कदम आगे धरकर पीछे हटाना नहीं जानता। सरकार बुद्धिमत्ता से कार्य ले नहीं तो पछताना पड़ेगा।

ऐसे वीर तेजस्वी, तपस्वी, त्यागी संत स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस 5 जनवरी 2015 को आ रहा है। ऐसे पुण्यात्मा संत का जन्मदिवस मनाते हुए हम उनके जीवन से त्याग तथा कर्मठता के गुणों को ग्रहण करके अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करें। स्वामी जी तप व त्याग की प्रतिमूर्ति थे। हम भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द के जीवन से शिक्षा लेकर मानवता के पथ प्रदर्शक बनें और देश हित के कार्य करें तथा आर्य समाज को एक नई दिशा देने का प्रयत्न करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

गायत्री महायज्ञ द्वारा जन्म दिवस मनाया

आर्या महिला सभा की अध्यक्षा माता जगदीश आर्या जी के 85 वे जन्मदिन के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ का आयोजन उनके निवास स्थान कटरा मित सिंह में 4 से 6 बजे तक 19 दिसम्बर को आयोजित किया गया। यज्ञ के पश्चात् सभी बहनों ने माता जी की लम्बी आयु की प्रार्थना के लिये ''तुम जिओ हजारो साल'' भजन गाया। वन्दना, सरोज, सुनीता, बेवी, कमला, रंजना, स्नेह, विजय अरोड़ा, कंचन अग्रवाल, अनीता, साक्षी, पारस आदि ने भजनों द्वारा समा बांधा। माता इन्द्रावती जी ने माता जी को फूलों द्वारा आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम के अन्त में माता जी ने सबका धन्यवाद किया। जलपान की व्यवस्था की गई तथा प्रसाद भी वितरित किया गया।

अगला **कार्यक्रम** : 26 दिसम्बर को माता जगदीश आर्य जी के निवास स्थान कटरा पित सिंह में स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस मनाया जायेगा।

-वन्दना आर्य

thearyasamaj.org

अग्निमय जीवन

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि महर्षि दयानन्द धाम, महादेव सुन्दरनगर, हिमाचल

वेदानुसार परमपिता परमेश्वर का एक नाम अग्नि भी है। उस अग्निरूपी परमात्मा से बुद्धिमान् लोग प्रार्थना करते है-

ओ३म् अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्।
हव्यवाहम् पुरूप्रियम्।।
(ऋ०1-12-2)

इस मन्त्र का ऋषि-मेधातिथि है और देवता-अग्नि है। मेधातिथि लोग (समझ से चलने वाले, बुद्धिमान्) उस (अग्नि) परमात्मा को ही पुकारते हैं जो (विश्वपति) समस्त जगत् का पालक और रक्षक है। किसलिए पुकारते है ? 1. निर्भयता के लिए, 2. हव्यवाहम्-यज्ञीय पदार्थों की प्राप्ति के लिए (यज्ञमयी भावना से परिपूर्ण होने के लिए), 3. पुरूप्रियम्-पूर्णता (तृप्ति, आनन्दादि) प्राप्त करने के लिए। प्रभु से प्रार्थना तो की गई कि वह हमें निर्भयता प्रदान करें, हमारे जीवन को यज्ञमयी बनाएं तथा हमें परमानन्द प्रदान करें मगर इस प्रार्थना को सफलीभूत करने के लिए हमें तद्वत् प्रयास भी करने होंगे। हमें अपने जीवन तथा जीवन के लक्ष्यों के प्रति सदा जागरूक रहना होगा। वेद भी कहता है कि-

ओ३म् यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।।
(सा०1826)

जो जागता है उसे ही 1. तमृचः-ज्ञान-विज्ञान प्राप्त होता है, 2. सामानि-उसे ही उपासनाएं व शान्तियां प्राप्त होती है, 3. सोमः-उसे ही सोम (शौर्य व वीरतादि) प्राप्त होता है, 4. सख्ये-उसे ही प्रभु की मित्रता प्राप्त होती है और उसे ही 5. न्योका अस्मि-निश्चित् निवास (सदा के लिए प्रभु का सान्निध्य) प्राप्त होता है। आगे वेद में बताया गया है कि जागता कौन है-

ओ३म, अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।
अग्निर्जागार तमयं सोम आहतवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।।
(सा०1827)

अग्नि का उपासक जागता है। ऐसा उपासक ही, ऋचः कामयन्ते-ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करता है, तम् उ सामानि-उसे ही उपासनाएं व शान्तियां प्राप्त होती है, तम् अयम् सोमः-उसे ही सोम, वीर्य, शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जागने वाला व्यक्ति ही कहता है-आह तव सख्ये अहम् न्योकाः अस्मि-हे प्रभु मैं तेरी मित्रता में निश्चित् निवास वाला हो गया हूं। अग्नि का उपासक अपने जीवन में बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त करता है। अग्नि के गुणों के माध्यम से हम उन समस्त उपलब्धियों पर चर्चा करते हैं-

1. अग्रणी भवति-निरूक्त में आया है-अग्निः कस्मात् अग्रणी भवति-जो आगे ही आगे चलती है। अग्नि का उपासक चतुर्दिक उन्नति करता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में वह पिछड़ता नहीं है। क्योंकि अग्नि में जो-जो गुण हैं उसे वह अपने जीवन में कार्यान्वित कर लेता है। अग्नि सदा ही-ऊर्ध्वगमन करती है। उसके लिए आप चाहे कितनी ही बाधाएं उत्पन्न करें मगर अपने लिए सदा ऊपर के लिए ही मार्ग खोजती है। उसे कोई किसी प्रकार से भी दबा नहीं सकता है, अग्नि स्वयं प्रकाशित है तथा सबको प्रकाशित करती है, अग्नि परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाकर सदा अपना विस्तार ही करती है, अग्नि में तेजस्विता है, वे तेजपूर्ण है इसलिए अग्नि का उपासक भी तेजोमय हो जाता है, अग्नि का एक गुण भस्मशीलता है। वह सब प्रकार की मलिनताओं को समाप्त करते हुए चलती है और अग्नि का एक गुण संघर्षशीलता भी है, अग्नि का उपासक भी जीवन संघर्ष में कभी पीछे नहीं हटता है....

2. अक्नोपनो भवति-अग्नि का उपासक सांसारिक विषयों से अपना स्नेह नहीं जोड़ता क्योंकि वह इस बात को अपने विवेक द्वारा जान लेता है कि संसार के किसी भी भोग में तृप्ति नहीं है बल्कि संसार के समस्त भोग हमें क्षणिक सुख देकर सदा-सदा के लिए अपने लक्ष्य से बहुत दूर ले जाते हैं।

3. तपो वा अग्निः(श०प०3-4-3-2)-अग्नि का उपासक अपने जीवन को तपस्वी बनाता है। वह अपने जीवन में जो भी संकल्प लेता है उसे पूरा किए बिना वह कभी भी, कहीं भी रूकता नहीं है बल्कि उसे प्राप्त करने के लिए निरन्तर कर्मशील बना रहता है।

4. अग्निर्वै पाप्मनोऽप-हन्ता(श०प०2-3-2-13)-अग्नि का उपासक अपने ज्ञान-विज्ञान तथा विवेकशीलता से समस्त पापों को नाश करने में सफल होता है।

5. अयं वा अग्निः ब्रह्म च क्षत्रं च(श०प०6-2-3-15)-अग्नि के उपासक का जीवन में बस एक ही लक्ष्य होता है कि अधिक से अधिक ज्ञान और बल का संचय करे....

6. अग्निर्वै ब्रह्मणो वत्सः(जैमिनी०3-2-23-1)-अग्नि का उपासक अपने तप, विवेक, मुमुक्षुत्व भाव आदि गुणों तथा वेद-प्रचार और संसार का उपकार करके उस प्रभु का अत्यन्त प्रिय बन जाता है....

7. अग्निर्वै स्वर्गस्य लोकस्य अधिपतिः(जैमिनी०3-42)-अग्नि का उपासक अपने पुण्य कर्मों से स्वर्गलोक का अधिपति बनता है। क्योंकि वह इस तथ्य को आत्मसात् कर लेता है कि-अग्निर्वै देवानां मुखम्। तथा स्वर्गकामो यज्ञेत्। वह स्वर्ग की केवल कामना ही नहीं करता बल्कि अपने जीवन में अग्नियों का चयन करके स्वर्ग को प्राप्त होता है।

8. अग्निर्ह वा अबन्धुः(जैमिनी०5-3-6-7)-यह अग्नि का उपासक अपने को कहीं भी बन्धने नहीं देता, कहीं भी आसक्त नहीं होता, अनासक्त-भाव से आगे ही आगे बढ़ता है। यही अनासक्ति उसे निष्काम कर्म के साथ जोड़ती है....

9. प्रजापतिः अग्निः(श०प०2-1-23)-इस प्रकार अनासक्त भाव से आगे बढ़ता हुआ यह उपासक ही प्रजाओं का स्वामी बनता है। अपने जीवन को अग्निमय बनाकर यह उपासक उस परमात्मा का ही हो जाता है तथा वह आत्म-यज्ञ का अधिकारी बन जाता है। कहते हैं कि एक बार राजा जनक ने भारी दक्षिणावाले यज्ञ का अनुष्ठान किया जिसमें अनेक ब्रह्म-ज्ञानी ऋषि आमन्त्रित थे। उन्होंने एक सहस्त्र गौवे जिनके सींग सोने से मढ़े हुए थे आगे करके कहा कि-हे ब्राह्माणों! आप में से जो ब्रह्म-ज्ञानी हो वह इन गौवों को ले जाए। महाराज जनक के ऐसा कहने पर किसी को भी गौवें हांकने का साहस नहीं हुआ मगर महामना याज्ञवल्कय जी ने अपने शिष्य से कहा, सामश्रवा गौवों को हांककर ले चलो....। याज्ञवल्कय के ऐसा कहने पर वहां पर उपस्थित अन्य ब्रह्मज्ञानियों ने उनसे बहुत से प्रश्न किए। जनक के होता अश्वल ने पूछा-हे याज्ञवल्कय तुम्हें नमन है मगर यह बताओ कि जो कुछ यह सब है, मृत्यु का ग्रास हो जाता है, आत्मज्ञानरूप यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला यजमान किस उपाय से मृत्यु से छुटकारा पा सकता है? याज्ञवल्क्य जी बोले-आत्मज्ञानरूपी यज्ञ के वाक्, चक्षु, प्राण और मन ये चार ऋत्विक् है, जीवात्मा यजमान है। इन चार वाक्, चक्षु, प्राण और मन ऋत्विजों द्वारा जब यज्ञ सम्पन्न हो जाता है तो आत्मा जन्म-मेरण के बन्धन से छुटकारा पा लेता है। अग्नि का उपासक जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाता है। वेद में कहा गया है-

ओ३म प्राणपा मे अपानपाः, चक्षुषाः श्रोत्रपाश्च।
वाचो मे विश्वभेषजो, मनसोऽसि विलायकः।।
(यजु० 20-34)

हे परमेश्वर तू मेरे प्राण का रक्षक, अपान का रक्षक, चक्षु का रक्षक और श्रोत्र का रक्षक, मेरी वाणी के सब रोगों की चिकित्सा करने वाला तथा मन को इन्द्रियों के साथ जोड़ने वाला और आत्मा में लीन कराने वाला है। अग्नि का उपासक इसके आध्यात्मिक रहस्य को समझ जाता है तथा वह प्रभु द्वारा दिए गए इन-इन करणों से आत्मयज्ञ ही करता है। इस प्रकार का व्यक्ति फिर परोपकारी ही बन जाता है-

ओ३म् अहिमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ।
अहं सूर्यइवाजनि।
(ऋ०8-6-10, सा०पू०2-2-6-8, अथर्व०20-11-1)

आत्म-यज्ञ करने वाला यह भक्त कहता है कि (अहम् इत) मैंने तो (हि) निश्चय से (पितुः) पालक पिता (ऋतस्य) सत्यस्वरूप परमेश्वर की (मेधाम्) धारणावती बुद्धि को (परिजग्रभ) सब ओर से ग्रहण कर लिया है, अतः (अहम्) मैं (सूर्यःइव) सूर्य के समान (अजनि) हो गया हूं। जिस प्रकार सूर्य से प्राणी मात्र को ही प्रकाश, ताप एवं प्राण मिल रहे हैं इसी प्रकार से अब मेरा स्वभाव ही परोपकार करना हो गया है। जबसे मैंने उस अग्नि की उपासना की है, मैंने मेधा बुद्धि प्राप्त कर ली है, मुझे नहीं पता मगर मुझसे दुनियां का भला ही हो रहा है.... संक्षेपतः अग्नि का उपासक जागरूक बनकर अपने जीवन में शरीर में जठराग्नि को, मन में उत्तम संकल्पाग्नि को, बुद्धि में ज्ञानाग्नि को, चित्त में योगाग्नि को और आत्मा में भक्ति-अग्नि को प्रज्वलित करके समस्त भौतिक पदार्थों को तथा आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर लेता है.....

thearyasamaj.org

उलटे को उलट दिया महर्षि दयानन्द ने

-ले० इन्द्रजित देव चूना भट्ठियाँ, सिटी सैन्टर के निकट, यमुनानगर (हरियाणा)

आज से अढ़ाई सहस्र वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध ने अपने समय की सामाजिक व पारिवारिक अवस्था देखकर पण्डितों से प्रश्न किया था- ''संसार में पीड़ा, दुःख व क्लेश आदि देखकर मैं पूछता हूँ कि ये सब क्यों हैं ? यदि यह संसार ईश्वर ने बनाया है व वही चला रहा है तो वह अच्छा ईश्वर नहीं है क्योंकि वह संसार के दुःखी प्राणियों को दुःखी ही रहने देता है। ऐसे ईश्वर की उपयोगिता व आवश्यकता ही नहीं है। तुम कहते हो कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है क्योंकि वह सर्व शक्तिमान है। सब कुछ कर सकने की क्षमता रखते हुए भी वह दुःख दूर नहीं करता तो मानना पड़ेगा कि वह है नहीं।''

अमर बलिदानी भगत सिंह ने भी यह प्रश्न किया था-''तुम कहते हो कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। यदि वह सब कुछ कर सकता है तो संसार में दुःख व कष्ट क्यों हैं? ईश्वर ने ब्रिटेन के आक्रान्ताओं को भारत में आने से रोका क्यों नहीं? भारत वासियों का शोषण व अत्याचार करने से ईश्वर अंग्रेज़ों को हटाता क्यों नहीं?''

जवाहर लाल नेहरू के भी ऐसे ही विचार थे—''निश्चय ही सृष्टि के मूल में कोई बड़ा दोष है, जिससे संसार में व्याप्त अव्यवस्था व दुःखादि के पीछे प्रयोजन कर्त्ता के होने में ही मुझे सन्देह होता है।''

आज भी अनेकानेक व्यक्ति आपको ऐसा चिन्तन करने वाले मिल जाएंगे। प्रश्नकर्त्ताओं को सही उत्तर न मिलने से वे नास्तिक हो जाते हैं। बुद्ध, भगत सिंह व जवाहर लाल नेहरू भी ऐसे ही व्यक्ति हुए हैं। ईश्वर की व्यवस्था, जीवों को कर्म करने की स्वतन्त्रता व सर्वशक्तिमान शब्द का सही अर्थ न समझकर ऐसे लोगों का नास्तिक हो जाना स्वाभाविक ही है। कथित विद्वानों व आस्तिकों ने ऐसे प्रश्नों के जो उत्तर दिए व देते हैं, वे उत्तर सत्य व तर्क के विपरीत हैं। अतः नास्तिकों को हम दोषी न ठहराकर कथित विद्वानों व आस्तिकों को ही दोषी मानते हैं। ऐसे उत्तर इस लिए प्रस्तुत किए जाते हैं कि वैदिक मान्यताओं की गहराई व सच्चाई तक पहुँचने की इच्छा, पुरुषार्थ व क्षमता ही कथित विद्वानों में समाप्त हो गई थी। परिणामतः वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों के विपरीत मनचाही व्याख्याएं व मनचाहे अर्थ प्रचारित किए गए थे। इसे यूँ भी कह सकते हैं कि वैदिक धर्म रूपी गिलास सीधा पड़ा था परन्तु इन कथित पण्डितों, आस्तिकों, आचार्यों व विद्वानों ने उलटा कर दिया था। इसे सीधा करने की बात तो दूर की बात है, इस उलटे पड़े गिलास को सीधा पड़ा ही मानते रहे तथा नादान लोगों से मनवाते भी रहे।

इस स्थिति में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ। उन्होंने उलटा पड़े गिलास को देखा व अपनी साधना, स्वाध्याय, पुरुषार्थ तथा ज्ञान से इसे सीधा कर दिया। स्वार्थी, मूर्ख, दुराग्रही, हठी धर्माचार्य तथा अविद्यादि से ग्रस्त सामान्य लोगों ने यह प्रचारित कर दिया कि महर्षि ने जो भी कहा, लिखा व प्रचारित किया है, वह सत्य के उलट कहा, लिखा व प्रचारित किया है। ये मान्यताएं व शिक्षाएं वास्तविकता व सत्य के विपरीत हैं। ऐसे लोगों से हमारा निवेदन यह है कि उलटी पड़ी वस्तुओं को उलटे बिना सीधा किया ही नहीं जा सकता। महर्षि ने यदि यह काम कर दिया तो क्या अपराध किया ? उलटी रखी थाली, पुस्तक, चारपाई अथवा गिलास आदि से उचित व सही लाभ आप तब तक प्राप्त नहीं कर सकते, जब तक आप इन्हें सीधा न रखेंगे। सृष्टि, सृष्टि के कर्त्ता व व्यवस्थापक को ठीक-ठीक सीधा-सुलटा समझे बिना हम इनके प्रति न्यायपूर्वक, उचित व सत्य व्यवहार नहीं करते। फलतः उचित व प्राप्तव्य लाभ प्राप्त नहीं कर पाते।

'सर्वशक्तिमान्' ईश्वर है परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं था कि वह सब कुछ कर सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने क्रान्तिकारी ग्रंथ 'स०प्र०' के सप्तम समुल्लास में इस सम्बन्ध में लिखते हैं—

प्रश्न- ईश्वर सर्वशक्तिमान है, या नहीं ?

उत्तर- है। परन्तु जैसा तुम 'सर्वशक्तिमान्' शब्द का अर्थ जानते वैसा नहीं। किन्तु 'सर्वशक्तिमान' शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति प्रलय आदि, और सब जीवों के पुण्य-पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित किसी की सहायता नहीं लेता अर्थात् अपने अनन्त सामर्थ्य से ही सब अपना काम पूर्ण कर लेता है।''

यदि ईश्वर के सर्वशक्तिमान् होने का यह प्रचलित अर्थ लिया जाए कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है तो अनेक प्रश्न उठते हैं जो मनोरंजन ही नहीं, तर्क संगत भी हैं व जिनके उत्तर किसी के पास नहीं हैं। इनमें से कुछ का वर्णन हम करते हैं :-

१. संसार में ३ पदार्थ अनादि हैं—ईश्वर, जीव व प्रकृति। यदि ईश्वर सब कुछ कर सकता है तो क्या वह सृष्टि का मूल उपादान कारण व जीव को भी उत्पन्न कर सकता है?

उत्तर है- इन्हें उत्पन्न नहीं कर सकता क्योंकि ये दोनों अनादि है, इन्हें कोई भी उत्पन्न नहीं कर सकता, इनका कोई आदि नहीं है।

२. क्या ईश्वर जल को अग्नि व अग्नि को जल बना सकता है ?

३. क्या परमात्मा मनुष्य योनि की आयु ४०० वर्षों से अधिक कर सकता है ?

४. क्या वह आत्महत्या कर सकता है ?

५. क्या वह मेरी (जीवात्मा की) हत्या कर सकता है ?

६. क्या वह अत्याचार या बलात्कार कर सकता है ?

७. क्या वह जीवों को सर्वव्यापक व सर्वज्ञ बना सकता है?

८. बिना प्रकृति क्या सृष्टि बना सकता है ?

९. क्या वह स्वयं जड़ बन सकता है ?

१०. क्या वह स्वयं मूर्ख व अज्ञानी बन सकता है ?

११. क्या वह दो बच्चों की माता को कुंवारी कन्या बना सकता है ?

१२. क्या वह अन्याय कर सकता है ?

१३. क्या वह पाप क्षमा कर सकता है ?

१४. क्या वह अपने जैसा दूसरा ईश्वर बना सकता है ? यदि कोई कहे कि नहीं बना सकता तो 'सब कुछ कर सकने वाले की ईश्वर' मानने वालों की बात स्वतः ही ढह जाती है। यदि कोई कहे कि हाँ, वह दूसरा ईश्वर बना सकता है तो उन्हें बताना पड़ेगा कि उस स्थिति में किस ईश्वर की व्यवस्था व इच्छा चलेगी ? प्रथम ईश्वर की व्यवस्था व इच्छा चलेगी तो दूसरे की आवश्यकता व लाभ ही क्या होगा ? क्या तब दोनों ईश्वरों में विवाद नहीं होगा ? होगा ही। तब निर्णय करने हेतु तीसरा ईश्वर चाहिए। कनिष्ठ व वरिष्ठ ईश्वरों में सदैव विवाद रहेगा।

१५. बच्चे खेल में मिट्टी-गारे की ऐसी ईंट बना सकते हैं, जो स्वयं उनसे भी नहीं उठती। क्या ईश्वर भी यह काम कर सकता है ? यदि कहें कि वह ऐसी ईंट नहीं बना सकता तो वही न बना सकने की अशक्ति की बात हो गई। यदि बना सकता है तो उसे उठा न सकने की बात आ गई। 'सब कुछ कर सकने वाला' ईश्वर दोनों स्थितियों में नहीं होगा—उभयतः पाशा रज्जुः।

१६. किसी कारखाने के स्वामी की इच्छा के विरुद्ध कार्य करने वाले कर्मचारी को स्वामी अपने कारखाने से बाहर निकाल सकता है। यही बात राजा पर भी लागू होती है। राजा अपने आदेश-इच्छा के विपरीत कार्य करने वाले किसी भी नागरिक को अपने राज्य से बाहर निकाल सकता है। इसे ''देश-निकाला'' भी कहते हैं। इतिहास में ऐसी घटनाएं पढ़ने को मिलती हैं। अंग्रेजों ने लाला लाजपत राय व सरदार अजीत सिंह को भारत से निष्कासित कर दिया था। बंगला देश की बंगला लेखिका तस्लीमा नसरीन की इस्लाम की कुछ मान्यताओं के विरुद्ध लिखने पर वहाँ की सरकार ने अपने देश से निकाल रखा है। वह बेचारी इस-उस पराये देश में रहकर जीवन व्यतीत कर रही है। जनता पार्टी के राज में मिजोरम के देश द्रोही नेता फ़ीज़ो को तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने भारत से बहिष्कृत किया था। ऐसे अन्य कई उदाहरण भी मिलते हैं। हमारा प्रश्न है कि क्या ईश्वर, जो राजाओं का भी राजा है, किसी ऐसे मनुष्य को, जो उसके बनाए संविधान वेद के विपरीत आचरण करता है, अपने राज्य से बाहर निकाल सकता है ?

(क्रमशः)

thearyasamaj.org

पंजाब में संस्कृत को लागू करने हेतु मांग पत्र

-ले० श्री स्वतन्त्र कुमार सभा उप-प्रधान

पंजाब सरकार एवं पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड सुनियोजित तरीके से समस्त हिन्दू समाज एवं संस्कृति प्रेमियों की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाते हुए संस्कृत भाषा को समाप्त करने पर तुले हैं। 8 वर्ष पूर्व से संस्कृत का पहले ग्रुप खराब करके उसे ड्राईंग के विकल्प में पढ़ाना बन्द किया। फिर उसे विदेशी भाषाओं जापानी, फ्रेंच, जर्मन आदि के साथ कर दिया। फिर हिन्दी और संस्कृत दोनों विषयों को साथ-साथ पढ़ने का अधिकार छीन लिए, उसके बाद संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों से अतिरिक्त फीस वसूली जाने लगी। इसके बाद परीक्षा परिणाम में संस्कृत के अंक जोड़ने ही बन्द कर दिये। और अब कक्षा 10 तक संस्कृत अध्यापकों के अभाव में संस्कृत भाषा को प्राय: पढ़ाना ही समाप्त कर दिया है। यह भी सुविदित है कि लगभग 15 वर्षों से सरकारी या असरकारी विद्यालयों में कोई संस्कृत अध्यापक की नियुक्ति नहीं हुई। जो संस्कृत अध्यापक सेवामुक्त हुए उस विद्यालय में संस्कृत बन्द करते गये। अब लगभग 10-15 अध्यापक ही बचे हैं। पहले अध्यापक पद समाप्त किए, फिर संस्कृत भाषा के कॉम्बीनेशन के साथ बार-बार छेड़खानी की जिसके कारण संस्कृत की स्थिति अति दयनीय हो गई। जब स्कूल में संस्कृत छात्र नहीं होंगे तो कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में कहाँ से आएंगे। अत: सरकार ने संस्कृत की जड़ को योजनाबद्ध तरीके से काटा जिसके कारण पंजाब में संस्कृत अब वैंटीलेटर पर पहुंच गई है।

यह भी बड़े आश्चर्य की बात है कि पंजाबी एवं पंजाब संस्कृति पर 90 प्रतिशत संस्कृत का ही प्रभाव है और सरकार इसी पर कुठाराघात करती रही है।

मान्य, सरकार क्या केवल एक विशेष समुदाय या भाषा की होती है ? और क्या पंजाब के हिन्दुओं को अपनी धार्मिक भाषा को पढ़ने का भी अधिकार नहीं ? पंजाब सरकार पंजाबी को कक्षा 1 से स्नातक तक अनिवार्य रूप से पढ़ा रही है और साथ-साथ एच्छिक पंजाबी, फंक्शनल पंजाबी, बेसिक पंजाबी, ऑनर्स पंजाबी, एडीशनल पंजाबी एवं विशेष पंजाबी अध्ययन के साथ 5-6 रूपों में पढ़ने पढ़ाने की सुविधा दे रही है लेकिन संस्कृत के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। जबकि वेद, रामायण, महाभारत व्याकरण जैसे विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ इसी धरती पर रचे गए।

माँग-पंजाब के समस्त हिन्दुओं एवं संस्कृत प्रेमियों की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित निर्णय तुरन्त लागू किए जाएं।

1. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड में कक्षा 6 से 10 तक संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए।

2. कक्षा 11 से स्नातक तक संस्कृत को अनिवार्य एवं वैकल्पिक दोनों विषय के रूप में पढ़ाया जाए।

3. स्नातकोत्तर कक्षाओं में दूसरे विषयों के साथ 20-20 अंक का संस्कृत का विशेष पाठ्यक्रम लगाया जाए। ताकि पंजाब को नशा, चरित्रहीनता, लूट-खसोट, चोरी आदि कुरीतियों से बचाया जा सके।

4. पंजाब में संस्कृत के विशेष अध्ययन हेतु एक संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए।

निवेदक-सभी सदस्य एवं अधिकारीगण के साथ।

नवांशहर में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया

नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रमुख शिक्षण संस्था दोआबा आर्य सी.सै.स्कूल में स्वामी श्रद्धानंद जी का बलिदान दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन के प्रधान तथा आर्य समाज नवांशहर के उप प्रधान श्री विनोद भारद्वाज ने छात्रों को जीवन को खुशहाल और उन्नत रखने का आह्वान किया। श्री भारद्वाज जी स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के बलिदान दिवस तथा स्कूल के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में विशेष अतिथि के तौर पर उपस्थित थे जबकि इस समारोह के मुख्य अतिथि संत बाबा जगतार सिंह थे।

श्री भारद्वाज जी ने कहा कि ज्ञान का सशक्त साधन शिक्षा है तथा यही वास्तविक धन भी है। उन्होंने कहा कि चाहे आर्य समाज एक धर्म नहीं है बल्कि सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आन्दोलन है लेकिन वेदों का अध्ययन हमेशा सत्य के मार्ग पर चलाना, समय का सदुपयोग करना, प्रकृति के अनुकूल चलना, ऋषियों मुनियों द्वारा दिखाए मार्ग को जीवन में धारण करना इत्यादि धर्म है। इससे पूर्व समारोह का शुभारम्भ ज्योति प्रज्जवलित करके किया। स्कूल के प्रिंसीपल राजिन्द्र गिल ने स्कूल की गतिविधियों से परिचित करवाया। स्कूल के उप प्रधान श्री ललित मोहन पाठक, श्रीमती मीना भारद्वाज तथा मुख्य मेहमानों की ओर से स्कूल के मेधावी विद्यार्थियों को विशेष तौर पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्कूल के विद्यार्थियों ने शानदार रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करके समूह श्रोताओं का मन जीत लिया। इस अवसर पर मीना भारद्वाज, ललित मोहन पाठक, एडवोकेट जे.के. दत्ता, अरविन्द नारद, सतपाल उम्मट, प्रि.डा. सरोज, प्रिं. मीनाक्षी शर्मा, ललित शर्मा, कुलवन्त शर्मा, राजिन्द्र शर्मा ज़िला प्रधान एडिड स्कूल यूनियन, प्रो.एन.के. गुप्ता तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

स्वच्छ भारत पर आधारित कोरियोग्राफी ने मनमोह लिया

आर्य माडल सी.सै.स्कूल के वार्षिक उत्सव पर बच्चों ने रंग-बिरंगे कार्यक्रम प्रस्तुत कर दर्शकों को मन्त्र मुग्द कर दिया। इससे पहले कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि श्री चिरंजी लाल गर्ग व विशिष्ट अतिथि श्री नंद लाल गर्ग द्वारा माँ सरस्वती तथा स्वामी दयानंद जी प्रतिमा आगे ज्योति प्रजवल्ति करके कार्यक्रम का शुभ आरम्भ किया गया। प्रधान श्री पी.डी.गोयल जी ने आए हुए मेहमानों का स्वागत करते हुए मुख्य अतिथि श्री चिरंजी लाल गर्ग तथा विशिष्ट अतिथि श्री नंद लाल गर्ग जी का जीवन परिचय करवाया। स्वामी सूर्यदेव जी ने अपनी शुभ आशीष दी। स्कूल के प्रिंसीपल श्री विपिन गर्ग जी ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी तथा स्कूल की पिछले वर्ष शैक्षणिक व अन्य उपलब्धियों का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि स्कूल की मार्च 2014 का वार्षिक परिणाम बहुत बढ़िया आया है। +2, आर्टस और कामर्स दोनों का परिणाम 100 प्रतिशत रहा। +2 की प्रेरणा ने पहला, मनीषा ने दूसरा, सिलकी ने तीसरा एवं कृतिका ने जहाँ राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के लिए चयनित किया वहीं पर प्रेरणा एवं मनीषा ने राज्य स्तर पर अपना स्थान निश्चित किया। इसी प्रकार 10th कक्षा का परिणाम भी शतप्रतिशत रहा। प्रथम निशा बांसल, दूसरे स्थान पर जानवीं एवं हितेश ने अपना नाम राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के लिए चयनित किया।

पब्लिक लाईब्रेरी में हुए गायन प्रतियोगिता में स्कूल के छात्र गुरप्रीत ने पहला स्थान प्राप्त किया। भारत विकास परिषद द्वारा समूह गायन प्रतियोगिता में स्कूल टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके इलावा दैनिक जागरण की ओर से करवाये गये संस्कारशाला में लगातार दूसरी बार प्रथम स्थान व युवा सम्पादक प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। मुख्य अतिथि श्री चिरंजी लाल गर्ग जी ने दर्शकों को संबोधित करते हुए कहाँ कि बच्चे ही देश का भविष्य है और बच्चों ने यह दिखा दिया कि उनके होते हुए इस देश को कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकता है। विशिष्ट अतिथि श्री नंद लाल गर्ग जी ने कहा यह हमारा सब का कर्त्तव्य है कि हम देश की उन्नति में अपना सहयोग दें। कार्यक्रम की सफलता का श्रेय सचिव श्री गौरी शंकर व उप प्रधान श्री रमेश गर्ग व आर्य समाज के महामन्त्री श्री नवनीत कुमार जी को जाता है इस मौके पर श्री अश्वनी मोंगा, श्रीमती ऊषा गोयल, श्री शांति जिन्दल जी, श्री सुरेश गोयल, श्री जगदीश राय बांसल जी, श्री शानु गोयल जी, स्कूल व समाज के पद अधिकारी उपस्थित रहे। श्रीमति परमिंदर कौर ने मंच के संचालन का कार्य कुशलतापूर्वक निभाया। कार्यक्रम के सफलतापूर्वक समापन पर स्कूल के प्रधान श्री पी.डी.गोयल जी ने अध्यापकों व छात्रों को शाबाशी दी।

thearyasamaj.org

ओम प्रकाश भगत नहीं रहे

आर्य समाज कबीर नगर जालन्धर के संरक्षक श्री ओम प्रकाश भगत का दिनांक रविवार 28 दिसम्बर 2014 को सायं पांच बजे देहावसान हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक 29 दिसम्बर को किया गया। श्री भगत जी बहुत ही मिलनसार और मधुरभाषी थे। उनका अन्तिम शोक दिवस 7 जनवरी 2015 दिन बुधवार को होगा।

स्त्री आर्य समान मॉडल टाऊन जालन्धर का 55 वां वार्षिक उत्सव तथा गायत्री महायज्ञ

आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में दु:ख निवारक सुखवर्धक पवित्र गायत्री महायज्ञ दिनांक 14 जनवरी 2015 दिन बुधवार से 12 फरवरी दिन वीरवार लगातार एक मास बड़ी श्रद्धा व उत्साह से आयोजित किया जा रहा है जिसकी पूर्णाहुति 12 फरवरी 2015 वीरवार को होगी। कार्यक्रम का समय दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक रहेगा। इस अवसर पर 14 जनवरी से 21 जनवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी (सुन्दर नगर), 22 जनवरी से 29 जनवरी तक आचार्य राजू जी वैज्ञानिक (दिल्ली), 30 जनवरी से 4 फरवरी तक पं. सुरेश कुमार जी शास्त्री (आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय जालन्धर) तथा 5 फरवरी से 12 फरवरी तक डा. महावीर मुमुक्षु जी (मुरादाबाद) को आमन्त्रित किया गया है। विशेष पूर्णाहुति समारोह दिनांक 12फरवरी 2015 को होगा। यज्ञ 11:00 से 12 बजे तक होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्य प्रकाश शास्त्री होंगे। भजन प्रवचन का कार्यक्रम 12 बजे से 2 बजे तक होगा। प्रीति भोज दोपहर 2 बजे के बाद होगा। श्रीमती नीरू कपूर जी के संयोजन में शुरू इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती प्रकाश रानी शर्मा करेंगी। मुख्यातिथि श्रीमती मधु पुरी जी चण्डीगढ़ तथा मुख्या वक्ता श्रीमती सरला भारद्वाज जी होंगी। वक्ता के रूप में श्रीमती ज्योति शर्मा तथा डा. सुषमा चोपड़ा अपना उद्‌बोधन देंगी। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि श्रीमती कमला कान्ता आनन्द तथा अतिथि श्रीमती गुलशन शर्मा, श्रीमती आभा चोपड़ा, डा. श्रीमती कृष्णा सिंह, प्रिं. श्रीमती अनीता नंदा जी होंगी। भजन श्रीमती रश्मि घई जी के होंगे। कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी द्वारा किया जाएगा। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज

कॉलेज स्तरीय वैदिक ज्ञान परीक्षा का परिणाम घोषित

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका द्वारा 29 अक्तूबर को आयोजित कॉलेज स्तरीय वैदिक ज्ञान परीक्षा-2014 का परिणाम घोषित कर दिया गया। वेद प्रकाश शास्त्री ने बताया कि यह परीक्षा बी.ए., बी.एड., एम.एड., ई.टी.टी. कुल चार ग्रुपों में ली गई थी जिसमें 630 छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए। फाजिलका क्षेत्र में ज्योति बी.एड. कॉलेज के बी.एड. ग्रुप में मीना रानी, दीक्षा, आंईना क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं। इसी कालेज के ई.टी.टी. ग्रुप में अलीशा, पूनम रानी, तमन्ना मक्कड़ क्रमश: प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय रहीं।

अबोहर क्षेत्र से बी.ए. ग्रुप में गोपीचन्द आर्य महिला कॉलेज की प्रिया (तृतीय वर्ष) प्रथम, दीक्षा (द्वितीय वर्ष) द्वितीय और अंशु शुक्ला (द्वितीय वर्ष) तृतीय स्थान पर रहीं।

ई.टी.टी. ग्रुप में महर्षि दयानन्द कॉलेज आफ एजूकेशन के पंकज चमीजा, मोहित कम्बोज एवं पूनम क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर रहे। बी.एड. ग्रुप में इसी कॉलेज की डिम्पल रानी, पिंकी रानी तथा प्रियंका रानी क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं।

दो सौ से अधिक संख्या के आधार पर विशेष श्रेणी के अन्तर्गत डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर के ई.टी.टी. ग्रुप की प्रिया, प्रियंका रानी तथा रूपिन्दर कौर क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं। बी.एड. ग्रुप में कुलवन्त सिंह, स्नेहा और नेहा ने क्रमश: प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। एम. एड. ग्रुप में सन्दीप कुमार, अनामिका वाट्स, राजविंदर कौर क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहे।

सभी सम्मिलित कॉलेजों के कुल 16 छात्र/छात्राओं को प्रोत्साहन हेतु भी चुना गया। शास्त्री जी ने वैदिक ज्ञान परीक्षा में सहभागी सभी महाविद्यालय प्रमुखों, शिक्षकों, अभिभावकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए समस्त छात्र/छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

-वेद प्रकाश शास्त्री

आर्य समाज बरनाला में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस सम्पन्न

दिनांक 23.12.2014 दिन मंगलवार को आर्य समाज मंदिर में बरनाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य परिवार की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। यज्ञ-ब्रह्मा श्री रणजीत शास्त्री जी के कुशल मार्ग-दर्शन में यजमान के रूप में श्री राम शरणदास गोयल जी ने आहुतियाँ डालीं। यज्ञोपरान्त पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन-चरित्र द्वारा वेद-मार्ग से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। श्री शिव कुमार बत्ता, श्री राम चन्द्र आर्य एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज के संगीत-प्रवक्ता श्री राजदीप जी ने अवसर अनुकूल सुन्दर-सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। डॉ. नीलम शर्मा प्रिं. आ. म. कॉलेज, श्रीमती मधु प्राध्यापिका आर्य महिला कॉलेज, श्रीमती ममता शर्मा अध्यापिका आर्य मॉडल हाई स्कूल तथा श्री सतीश सिन्धवानी ने समयानुकूल अपना वक्तव्य प्रदान करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से महत्वपूर्ण घटनाओं द्वारा वैदिक प्रचार में सर्वस्व समर्पित करने के लिए प्रेरित किया। अन्त में सामाजिक-गतिविधियों में अपना अमूल्य योगदान देने के लिए मानयोग प्रधान-डॉ. सूर्यकान्त शोरी ने समस्त उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद किया। शान्ति-पाठ के बाद प्रसाद-वितरण किया गया। इस प्रकार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-तिलक राम मन्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर विशेष

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में 23 दिसम्बर 2014 को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर सबसे पहले हवन यज्ञ किया गया जिसे पं. योगराज शास्त्री जी ने करवाया। यज्ञ के पश्चात् यज्ञ में बैठे यज्ञमानों को आशीर्वाद दिया फिर इसके बाद स्कूल की छात्रा कुमारी मेघा ने स्वामी जी के बलिदान दिवस के बारे में भाषण दिया जिसमें बताया गया कि स्वामी जी धर्मवीर, कर्मवीर और दानवीर थे और उन्होंने दयानन्द जी के मिशन को पूरा करने में अपना सर्वस्व होम कर दिया। इस अवसर पर श्री विजय सरीन जी ने बच्चों को बताया कि श्रद्धानन्द जी को स्वामी दयानन्द जी के प्रवचनों ने मुंशीराम को महात्मा मुंशीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया। उन्होंने उत्सव, अधिवेशन, जलसों, जुलूस, प्रवचन, उपदेश और वेद कक्षाओं ने पंजाब और पंजाब के बाहर आर्य समाज की धाक जमा दी। स्वामी जी ने रोलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह किया। ब्रिटिश सिपाहियों ने अपनी राइफल उनकी छाती पर रखकर कहा कि एक कदम भी आगे बढ़ाया तो गोली सीने के पार हो जायेगी और उन्होंने अपनी छाती से चादर उतारते हुए कहा था "सामने खड़ा हूँ हिम्मत है तो चलाओ गोली" और सामने खड़ा गोरखा सिपाही थर-थर कांपने लगा। फिर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी श्री दविन्द्र शर्मा जी ने श्रद्धानन्द जी के जीवन की घटनाओं को सुनाते हुए उनका जीवन परिचय दिया। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय उन्हीं की देन है। सबसे पहले कन्याओं के लिये स्कूल उन्होंने ही खुलवाए। एक बार ब्रिटिश सिपाहियों ने उनका विरोध किया कि आपके गुरुकुल में बम बनाये जाते हैं तो स्वामी जी ने उत्तर दिया कि हां मेरे गुरुकुल में ऐसे बम बनाए जाते हैं जो ब्रिटिश राज्य को अपने देश से दूर भगायेंगे और अपना आज़ाद देश बनायेंगे। अन्त में स्कूल के प्रधान जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया और समाज में फैली कुरीतियों, बाल-विवाह, विधवा विवाह निषेध, जाति-पाति, अस्पृश्यता, और पर्दा प्रथा को जड़ से उखाड़ने के लिए कमर कस ली इस अवसर पर कमेटी मैम्बर्स श्री गोपाल कृष्णा अग्रवाल श्री सुरिन्द्र कुमार जी रमाकान्त माहजन, कृष्ण कुमार पासी जी उपस्थित थे। अन्य मैम्बर्स में श्रीमती विनोद गाँधी, श्रीमती शुभलता जी और भँडारी जी भी उपस्थित थे। शान्ति पाठ के पश्चात् बच्चों को और बड़ों को सबको प्रसाद बाँटा गया मैम्बर्स के लिए और स्टाफ के लिये जलपान का अति उत्तम प्रबन्ध था।

-सुनीता मलिक

thearyasamaj.org

वेदवाणी

परमेश्वर की स्तुति का पार पाना असम्भव

तुंजेतुंजे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः॥
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्॥

-ऋ० १। ७। ७; अथर्व० २०। ७०। १३

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

विनय—भगवान् ने मुझपर कितनी कृपा की है, इसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। मेरे कल्याण के लिए जब जिस वस्तु की आवश्यकता हुई, तभी वह वस्तु कहीं से आ मिली। वह कल्याणस्वरूपिणी माता पुत्र की एक-एक आवश्यकता को पूर्ण रूप से जानती हुई चिन्ता-पूर्वक देती जाती है। ओह, उसकी करुणा अपार है! भगवान् के इस जगत् में रहने वाले बहुत-से मनुष्य न जाने क्यों सन्तोष का परित्याग किये रहते हैं और घबराते हैं। वे या तो प्रत्येक प्राणी को दी गई भगवान् की स्वाभाविक देन का मूल्य नहीं समझते या वे अकृतज्ञ हैं। पहली बात ही ठीक समझी जा सकती है, पर मैं तो यही कहूँगा और बिना थके कहता जाऊँगा कि पाप से हटाने वाले उस परमैश्वर्ययुक्त इन्द्र भगवान् ने मुझे निहाल कर दिया है, मुझे पाप और दुःख के गर्त्त से उबारा है। एक के पश्चात् एक ऐसा आन्तरिक सुख मिलता गया है कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। जब-जब उसकी ये देनें याद आती हैं तो आनन्दाश्रुओं से मैं गद्गद हो जाता हूँ और मेरे मुख से कृतज्ञता-भरी वाणी से उसके गुणों के गान निकलने लगते हैं; उसके स्तोत्र गाता जाता हूँ, परन्तु तृप्ति नहीं होती। ओह, यह अपूर्ण वाणी हृदय के अनुभूत भाव को पूर्णतया कहाँ प्रकट कर सकती है? फिर भी मैं पूर्णता की आशा में बार-बार गाता जाता हूँ—गाता जाता हूँ, परन्तु स्तुति कभी पूरी नहीं होती। यह कभी अनुभव नहीं हो पाता कि उसकी जी-भरके स्तुति हो गई। ओह, उसकी स्तुति का कौन पार पा सकता है! "अपार तेरी दया, अपार तेरी दया!"

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ा श्रद्धापूर्वक मनाया

इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में आर्य समाज लक्ष्मणसर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभ-आरम्भ पं. सोम देव जी ने यज्ञ से किया। पं. विजय कुमार शास्त्री जी महोपदेशक-आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी जी ने राष्ट्र व समाज के प्रति जो कार्य किये है उनका शब्दों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता। शिक्षा की पुरातन वैदिक पद्धति गुरुकल प्रणाली का पुनरुद्धार किया व विश्व प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। अपने धर्म से विमुख हुए अपने भाईयों को शुद्धि आन्दोलन चला कर अपने गले लगाया। 30 मार्च 1919 के रोल्ट ऐक्ट के विरोध में दिल्ली आन्दोलन का नेतृत्व किया। इस अवसर पर इन्द्र पाल आर्य प्रधान ने आए हुए सभी महानुभावों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम सब मिलकर महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाते हुए आर्य समाज का सन्देश जन-जन तक पहुंचाऐ। इस अवसर पर सर्व श्री सोमेश कपूर महामन्त्री आर्य समाज, प्रवीण कुमार, विनोद पाल, ओम प्रकाश आर्य, मोहित आर्य, हर्ष देव वर्मा, शुक्ला देव, विजय वर्मा, संजय कुमार, अशोक चौहान डिम्पी मेलाराम, रामपाल आर्य, सतीश सुद्ध, विशाल आर्य, कश्मीरी लाल, जवाहर लाल सनेह शास्त्री, शारदा, वियेता, सुषमा पसाहन, रचना, नन्द किशोर, अमित कुमार आदि उपस्थित थे।

सोमेश कपूर महामन्त्री

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।